बी. ए. हिन्दी (प्र0) खण्ड - प्रथम पत्र - प्रथम

हिन्दी साहित्य का इतिहास

डॉ0 संतोष कुमार

साहित्य = जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब

अर्थात्, किसी भी देश का साहित्य वहाँ की जनता का संचित प्रतिबिंब होता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि साहित्य का स्वरूप जनता की चित्तवृत्ति पर ~~नि~~ निर्भर करता है। अर्थात् जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ - साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता है!

"आदि से अंत तक इन्हीं ~~चित्तवृत्ति~~ चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

इतिहास : अर्थ व स्वरूप

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है - 'ऐसा ही था' या, 'ऐसा ही हुआ'। इतिहास में दो बातें मुख्य हैं, पहली, इतिहास का संबंध अतीत की घटनाओं से है। दूसरी, इसमें केवल वास्तविक घटनाओं का अध्ययन होता है। अतः कह सकते हैं कि "अतीत के किसी भी तथ्य, ~~त~~ तत्व एवं ~~प्रवृत्ति~~ प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन - विश्लेषण को - जो कालक्रम या काल विशेष की दृष्टि से किया गया हो - इतिहास कहा जा सकता है!

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा

भूमिका

हिन्दी साहित्य लेखन की अब तक परम्परा का यदि अध्ययन किया जाय तो हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन में अनेक दार्शनिक अवधारणाओं का पता चलता है। कहीं द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद का प्रभाव है तो कहीं जातीय परम्परा का दृष्टिकोण प्रधान है।

मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण और अर्थ-विज्ञान के आधार पर भी हिन्दी साहित्य के इतिहास की रचना हुई है, कहीं संघर्ष और आर्थिक विकास की परिस्थितियों को केन्द्र में रखकर भी साहित्य इतिहास लिखे गए हैं। साथ ही युग चेतना का सिद्धान्त भी साहित्येतिहासकारों ने अपनाया है।

डॉ० नगेन्द्र ने साहित्य की विकास प्रक्रिया के अध्ययन के लिए निम्न पाँच कारकों को विचारणीय माना है —

01. सर्जन शक्ति (साहित्यकार की प्रतिभा व उसका व्यक्तित्व)
02. परम्परा (साहित्यिक व सांस्कृतिक परंपराएँ)
03. वातावरण
04. द्वन्द्व
05. संतुलन